पाठालोचन

सम्पादक
डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

© संपादकाधीन
सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक के किसी अंश को अनुमति प्राप्त किए बिना, किसी भी रू
में या किसी भी माध्यम से पुनर्प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस प्रकाशन क
संबंध में अनधिकृत कार्य करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध आपराधिक अभियोजना की कार्यवाही क
साथ ही, नागरिक कानूनों के तहत क्षतिपूर्ति के लिए मुकदमा दायर किया जाएगा। विवाद क
स्थिति में न्यायक्षेत्र फतेहपुर (उ.प्र.) होगा।

प्रथम संस्करण	:	2019
प्रकाशक	:	मधुराक्षर प्रकाशन, फतेहपुर (उ.प्र.)
मुद्रक	:	उमा आर्ट प्रेस, फतेहपुर (उ.प्र.)
मूल्य	:	₹ 1,100/– मात्र

Pāthālochan Edited by Dr. Ashwinīkumār Shukla

ISBN : 978-81-929060-7-2

उद्घाटन खंड

1. पाठालोचन के विभाग : सामान्य परिचय // डॉ. हरिशंकर मिश्र 17
2. पाठानुसंधान : प्राचीन कृतियों के मूलपाठ का अन्वेषणविज्ञान // डॉ. योगेंद्रप्रताप सिंह 23
3. पाठालोचन : संदर्भ रीतिकालीन हिंदी हस्तलिखित ग्रंथ // डॉ. दयाशंकर शुक्ल 29
4. पाठालोचन : सिद्धांत और प्रक्रिया //डॉ. कन्हैया सिंह 44
5. पाठ-संपादन और अर्थ समस्या // डॉ. नरेंद्र मिश्र 52

खंड–एक

पाठालोचन का स्वरूप और उसके विभाग तथा प्रकार
पाठालोचन का विकास और इतिहास
पाठालोचन की विभिन्न प्रविधियाँ (पद्धतियाँ)

1. पाठालोचन की प्रविधि : समस्याएँ और संभावनाएँ // डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र 61
2. पाठालोचन : प्रकृति एवं प्रविधि // डॉ. हितेंद्रकुमार मिश्र 65
3. पाठालोचन का विकास और इतिहास // डॉ. मधुसूदन मिश्र 73
4. पाठालोचन की विविध प्रविधियाँ // डॉ. राकेशनारायण द्विवेदी 78
5. पाठानुसंधान का स्वरूप एवं प्रक्रिया // डॉ. बीनारानी गुप्ता 83
6. पाठालोचन की पद्धतियाँ // डॉ. हेमांशु सेन 90
7. हिंदी पाठालोचन : इतिहास और विकास // डॉ. श्रुति 97

खंड–दो

वाचनकला और लिपिविज्ञान का अंतर्संबंध
पांडुलिपियों का सर्वेक्षण, संरक्षण और प्रकाशन : समस्या और उपाय
पाठ-विकृतियाँ : कारण और निवारण

1. बुंदेलखंड में उपलब्ध 'रामचरितमानस' की हस्तलिखित प्रतियों में पाठभेद // डॉ. सभापति मिश्र 111
2. असनी (फतेहपुर) के गणेश कवि कृत 'साहित्य सागर' // डॉ. उदयशंकर दुबे 120
3. 'पदुमावति'का पाठविमर्ष // डॉ. कन्हैया सिंह 130
4. पाठालोचन के कुछ पक्ष//प्रो० त्रिभुवन नाथ शुक्ल 145
5. पाठालोचन की दृष्टि से पाठविकृतियाँ : कारण और निवारण // डॉ. गयाप्रसाद 'सनेही' 151
6. पाठ-विकृतियाँ : अवधारणा एवं कारण // डॉ. अंकिता तिवारी 170
7. पाठ-विकृतियाँ : पहचान और स्वरूप // डॉ. सियाराम 174
8. पाठ-विकृतियाँ : कारण और निवारण // डॉ. धर्मेंद्रकुमार 184
9. पाठ-विकृतियाँ और उनके कारण // डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी 188
10. पाठ-विकृतियाँ : कारण और निवारण // डॉ. इंद्र सिंह ठाकुर 198
11. पाठ-विकृतियाँ : कारण और निवारण // डॉ. अरुणा गुप्ता 203

पाठ विकृतियाँ और उनके कारण

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी*

पाठ–विज्ञान के अंतर्गत प्रतिलिपिकार द्वारा की जानेवाली भूलें पाठ–विकृतियाँ जैसी संज्ञा से अभिहित की जाती हैं। डॉ. कन्हैया सिंह ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया है–"किसी भी रचना के लेखक द्वारा प्रस्तुत मूल पाठ में प्रतिलिपिकारों के द्वारा हुई स्पष्ट अथवा निश्चेष्ट परिवर्तन, वृद्धि अथवा कमी करने की प्रवृत्ति, प्रक्रिया तथा उसके परिणाम को पाठ–विकृति कहते हैं।"[1] पाठ–विकृतियाँ प्रतिलिपिकारों की ईमानदारी तथा बुद्धि दोनों की कमी के कारण संभव होती हैं।सामान्यतः पाठ विकृतियों को प्रतिलिपिकार की इच्छा या चेष्टा के आधार पर त्रिधा वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

I. सचेष्ट विकृतियाँ
II. निश्चेष्ट विकृतियाँ
III. सचेष्ट–निश्चेष्ट विकृतियाँ

सचेष्ट विकृतियाँ (Semi Corruption):– सचेष्ट विकृतियों को साधारणतः प्रक्षेप की संज्ञा दी जाती है। अंग्रेजी में इसका समानार्थी शब्द है– Interpolation। इस शब्द की व्युत्पत्ति 'पालिस' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है चमकाना। वस्तुतः प्रतिलिपिकार जब मूल पाठ में प्रक्षेप करता है, तो उसका उद्देश्य उस पाठ को चमकाने सरीखा ही होता है। संभव भी है कि प्रक्षेप के द्वारा मूल पाठ और सुंदर बन जाय। लेकिन वैज्ञानिक पाठालोचक इस प्रक्रिया को हस्तक्षेप मानता है। आगम, लोप, विपयर्य और व्यत्यय जैसे चार प्रकार से यह प्रक्रिया निष्पन्न होती है। इस वर्ग में आनेवाली भूलों के कारणों को निम्नवत् देखा जा सकता है:–

1–अनधिकार सुधार करना :– यह सुधार कई प्रकार से किया जाता है। किसी शब्द के व्याकरण के प्राचीन पड़ जाने पर कभी–कभी प्रतिलिपिकार

*एसोशिएट प्रोफेसर, (हिंदी), तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम